डा० राम सिंह

प्रिंसिपल, डी.पी.एस. राँची

शिक्षा समाज की सभी विनाशकारी और प्रतिकूल शक्तियों के खिलाफ एक मजबूत ढाल है। यह व्यक्तित्व रूपांतरित करने की क्षमता है जो व्यक्ति विशेष की रचनात्मकता को प्रोत्साहित और समृद्ध करती है।

निस्वार्थ सेवा भावना से हर व्यक्ति महान हो सकता है। इसके लिये केवल करुणा एवं सहृदयता होनी चाहिये। आत्मा सबके प्रति प्रेम भाव से संचालित हो, यही तो डा० राम सिंह का उद्देश्य है।

उनकी विशिष्टता वैश्विक नागरिक को गढ़ना है। एक उत्कृष्ट शिक्षाविद होने के साथ-साथ वे बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं जो बड़े पैमाने पर समाज की भलाई के लिये कार्यरत हैं। ढाई दशक से अधिक समय तक राष्ट्र के भविष्य को आकार देते हुए राष्ट्र के दूरस्थ कोनों तक पहुँचने की उनकी दूरदृष्टि रही है। समाज के सबसे निचले तबके तक शिक्षा और जीवन मूल्यों का प्रकाश फैलाने के लिये उन्होंने समय समय पर सरकारी निकायों को बिना शर्त समर्थन दिया है। (NPEGEL) प्राथमिक स्तर बालिका शिक्षा हेतु राष्ट्रीय कार्यक्रम, दीप्ताभ, (SSA) सर्व शिक्षा अभियान, शिक्षा के अधिकार, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, (IDMI) अल्पसंख्यक संस्थान के बुनियादी ढाँचा विकास योजना, स्वच्छ भारत अभियान, ग्रीन स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम, फिट इंडिया आदि कार्यक्रमों में इनकी सक्रिय सहभागिता रही है।

इनके साथ साथ डा० राम सिंह द्वारा समाज के उत्थान हेतु दृढ़ और व्यापक कदम उठाए गए हैं। वे यूनिसेफ, युनेस्को जैसे विविध (NGO) गैर सरकारी संस्थान एवं निकायों से निकटता से जुड़े रहे हैं। जनहित और मानवतावादी सोच रखने के कारण वे वंचित वर्ग के उत्थान एवं सभी प्रकार के भेदभाव मिटाने के लिये चलाए जाने वाले सरकारी गैरसरकारी अभियानों के अभिन्न अंग बन गए हैं। जीवन भर समाज की सेवा करना उनकी जीवन दृष्टि बन गई है।

समकालीन उपलब्धियाँ

- **सदस्य : झालसा (झारखण्ड राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण)**
  समाज के कमजोर वर्ग को मुफ्त कानूनी सहायता प्रदान करता है एवं विवादों के त्वरित समझौतों के लिये लोक अदालत का आयोजन करता है।
- **सदस्य : झारखण्ड राज्य उच्च शिक्षा परिषद (RUSA द्वारा संचालित)**
  राज्य स्तर पर शिक्षा अभियान उच्च शिक्षा के लिये विकास की एक समग्र योजना
- **अध्यक्ष : झारखण्ड काउंसिल ऑफ एजुकेशन, रिसर्च एंड ट्रेनिंग (JCERT) द्वारा गठित समिति**
- **सदस्य : केइपीएस (कायाकल्प एजुकेशन प्रमोशन सोसाइटी) सेन्ट्रल कोलफील्ड्स लिमिटेड राँची द्वारा संचालित**
  समर्थ और असमर्थ के बीच असमानता कम करने के लिये
- **सदस्य : चीफ मिनिस्टर स्कूल शिक्षा समिति झारखण्ड**
- **संयोजक : झारखण्ड अकादमिक काउंसिल की माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक परीक्षाओं में सीबीएसई पैटर्न लागू कराने हेतु बनी समिति के संयोजक**
- **राज्य समन्वयक : युनीफाइड काउंसिल, हैदराबाद के झारखंड क्षेत्र हेतु**
- **अध्यक्ष : अरविंदो सेंटर फॉर इंटीग्रल एजुकेशन, रामपुर (उत्तर प्रदेश)**
- **अध्यक्ष : सहोदया स्कूल कॉप्लेक्स, राँची**
  झारखण्ड प्रदेश के सीबीएसई स्कूलों में शिक्षा के स्तर में सुधार हेतु कार्यरत
- **प्रदेश अध्यक्ष : झारखण्ड ग्लोबल टॉक एजुकेशन फाउंडेशन (CED) सीइडी का एक सहायक उपक्रम**
- **अध्यक्ष : राज्य पुस्तकालय सलाहकार समिति**
- **अम्बेस्डर : मिशन नॉलेज युनेस्को**
- **सदस्य : शैक्षणिक समिति की अपेक्स बॉडी (NIOS)**

प्रशस्ति एवं सम्मान

हर मनुष्य की शिक्षा का सर्वश्रेष्ठ और सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाग आत्मरूपांतरण है ताकि वह जीवन की चुनौतियों पर विजय पा सके।

- सीबीएसई नेशनल टीचर्स अवार्ड 2015, श्रीमती स्मृति ईरानी मानव संसाधन मंत्रालय द्वारा प्रदत्त
- प्रतिभा सम्मान 2015 प्रभात खबर - माननीय राज्यपाल झारखंड द्वारा प्रदत
- कोरोना कर्मवीर सम्मान (2020) राष्ट्र सृजन अभियान द्वारा प्रदत्त
- एक्सीलेंस अवार्ड (2016) झारखण्ड सरकार द्वारा प्रदत्त
- एसोचम (ASSOCHAM) द्वारा स्कूल शिक्षा में नवाचारों और उत्कृष्टता के लिये प्रतिष्ठित पुरस्कार से सम्मानित
- इन्टरनेशनल स्कूल अवार्ड (2015-2018) ब्रिटिश काउंसिल द्वारा
- प्रतिष्ठित शिक्षाविद पुरस्कार (2012) हिन्दुस्तान (अग्रणी मीडिया समूह) द्वारा प्रदत्त
- सर्वश्रेष्ठ सह-समन्वयक अवार्ड (2004) साइंस ओलंपियाड नई दिल्ली; केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री श्री बच्ची सिंह राउत (केन्द्र सरकार) द्वारा प्रदत्त
- बेस्ट नेशनल साइबर ओलंपियाड (NSO) इंचार्ज अवार्ड राज्य स्वास्थ्य मंत्री श्री ए के वालिया द्वारा प्रदत्त
- गोल्ड डॉलर अवार्ड (2004) युनीफाइड काउंसिल द्वारा छात्रों के श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिये प्रदत्त

विशेष समाजिक पहल

- दीप्ताभ- वंचित समुदाय के बच्चों को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा प्रदान करने और उन्हें बेहतरीन अवसरों का लाभ उठाने के लिए समर्थ बनाने की ओर एक सार्थक पहल है।
- कानूनी साक्षरता क्लब की स्थापना - छात्रों में कानून के बारे में जागरूकता बढ़ाने के साथ न्यायपालिका की प्रणाली की समझ को बढ़ाया जाता है।
- उड़ान - औपचारिक रूप से लड़कियों को शिक्षित करने के लिए कंप्यूटर साक्षरता में तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान करना। बालिका-शिक्षा ही हमारी प्राथमिकता रही है और उनकी शिक्षा सुनिश्चित करने की पहल हुई हैं
- श्री अरविंदो सोसाइटी द्वारा निर्दिष्ट 'एकीकृत शिक्षा' के स्वरूप को प्रोत्साहित किया गया।
- अनेकानेक गतिविधियाँ आयोजित जैसे 'रन फॉर युनिटी' और स्वच्छता अभियान आदि ताकि छात्रों की व्यापक भागीदारी सुनिश्चित हो।
- रक्तदान - छात्रों को इस विषय के बारे में जागरूक करना कि रक्तदान मानव जाति की सबसे महत्वपूर्ण सेवा है। समय पर किया गया रक्तदान दुनिया भर में जीवन सुरक्षित कर सकता है।
- स्वच्छता की आदत को प्रोत्साहित करने के लिए 'स्वच्छ भारत' या स्वच्छ भारत अभियान का निष्ठापूर्वक आयोजन। झारखण्ड सरकार द्वारा शिक्षा के स्तर के उत्थान हेतु झारखण्ड के बच्चों के लिए आरंभ किए गए विभिन्न कार्यक्रमों के निष्पादन हेतु सहायता की अपरिवर्तनीय एवं बिना शर्त समर्थन की दूरदर्शी तैयारी।

आदर्श वाक्य 'स्व से पहले सेवा' को वहन करने के लिये युवा पीढ़ी का निरीक्षण

माननीय राज्यपाल श्रीमती द्रौपदी मुर्मू द्वारा वंचित बच्चों को सुदृढ़ बनाने के लिये दीप्ताभ का उद्घाटन

मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन द्वारा बालिका सशक्तिकरण कार्यक्रम में सहभागिता

उड़ान (UDDAN) – कम्प्यूटर साक्षरता मिशन के बढ़ावा देने हेतु माननीय मुख्यमंत्री श्री रघुवर दास से विचार विमर्श

राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार 2015 माननीय मंत्री श्रीमती स्मृति इरानी (मानव संसाधन विकास मंत्रालय) के कर कमलों से सम्मानित

प्रशिक्षण और कौशल विकास के बारे में जागरूकता फैलाने के लिये केन्द्रीय मंत्री श्री राजीव प्रताप रूडी के साथ

पूर्वांचल तीर्थ क्षेत्र समिति और शिखर संस्कार के तत्वावधान में माननीय सभापति श्री दिनेश उराँव द्वारा सम्मानित

दैनिक जीवन में योग का महत्व समझते हुए स्वामी रामदेव के साथ

'प्रभात खबर' द्वारा आयोजित समारोह 'अपराजिता' में सहभागिता जहाँ महिलाओं को सम्मानित किया गया

शिक्षक दिवस के अवसर पर 'गुरु सम्मान समारोह' में डा० लुइस मरांडी द्वारा उत्कृष्टता सम्मान से सम्मानित

बाल उत्पीड़न के समूल नाश हेतु नोबल पुरस्कार से सम्मानित महान व्यक्तित्व श्री कैलाश सत्यार्थी के साथ बातचीत

मानवता प्रसार हेतु युवा पीढ़ी को प्रेरित करते हुए श्री गिरिराज सिंह एवं डा० राम सिहं

माननीय गवर्नर दिवंगत सैय्यद अहमद डीपीएस राँची के अग्रगामी कदमों को पहचानते हुए

माननीय मुख्यमंत्री श्री रघुवर दास के साथ डा० राम सिंह

शिक्षा मंत्री श्रीमती नीरा यादव द्वारा 2016 में दैनिक भास्कर द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में गुरु शिक्षा सम्मान अवार्ड प्राप्त करते हुए

पद्मश्री सम्मान प्राप्त व्यक्तित्वों को सम्मानित करते हुए

केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री उपेन्द्र कुशवाहा के साथ डा० राम सिंह

माननीय श्री जस्टिस एस. मुखोपाध्याय न्यायाधीश, सर्वोच्य न्यायालय भारत एवं अन्य माननीय न्यायधिशों के साथ प्राचार्य कानूनी साक्षरता समाचार पत्र जारी करते हुए

The Impact of words on Society

Figuring Out the New Normal

When the going gets tough Tough gets ONLINE !

Dr. Ram Singh
Principal DPS Ranchi

Due to the Covid-19 pandemic and the resultant lockdown, Schools have been shut to prevent the spread of the virus and this has given way to online classrooms, for most of the schools. All thanks to tools such as Zoom, Google Hangouts, and Microsoft Teams. We start afresh with the concept of New Normal where the communication, technology, webinars, virtual classes, Online training, websites, and lot more are the tools to get us going.

However, in DPS Ranchi information and technology have always been hand in hand even in the Pre - COVID era. Now there has been a paradigm shift in teaching and learning from classroom teaching to virtual classes. I strongly believe that the crisis situation cannot diminish the zest for knowledge in the minds of the students. Instead, this has paved the way for a new dimension in education – replacing physical classrooms with an online mode of teaching and learning.

In this tough time, different methods of technology are being tried and tested by our teachers and management to minimize the loss due to the closure of the school. The teachers are all set and have started with the online classes in every subject to keep the momentum going on. Whatsapp group has been formed by the teachers with the students to pass on the immediate information. Like usual school days, the routine has been prepared for the proper classes and the details are shared with the students. The virtual classes are no less than the physical classrooms wherein students are being taught with perfection addressing their queries and concerns.

It's astounding to see the nursery students responding so well in the virtual classes who could not attend the school even for a day due to the pandemic. They really set an example of optimism when we all are cribbing in the said situation.

I further appreciate and applaud the untiring efforts of the teachers who are preparing the slides, PPt's, and assignments to teach the students through the virtual classes which have not been the part of everyday teaching.

Necessity is the mother of invention and DPS Ranchi has invented numerous ways to guide, train, and teach their students. It's surprising to see the teachers adapt themselves at such a fast pace. The technology has not only been confined to the syllabus and the courses instead the teachers have well adopted the tool for the students' engagements, activities, and summer camp. Recitation competition was held on Zoom for the junior wing and the kids were elated to recite poems for their friends and teachers. They are leaving no stone unturned to make it all normal at the best.

I seriously think"Learning never stops whatever be the hurdles, we as a teacher, a guide, a mentor have to find a way out. We cannot wait for the lockdown to be over, days to be normal, solutions to be provided. We are going ahead with teaching and have even made the books available to the students to facilitate uninterrupted learning.

As a Principal, I had to take a stand and abide by it. I have motivated the team to accept the new normal and give their best to ease out things for the students irrespective of the barriers. We cannot sacrifice the learning of the students as their time is precious. They have already lost their freedom to move out, have fun with their friends, play in the ground, and lot more and are forced to confine themselves within the four walls due to this pandemic. We cannot normalize everything but definitely we are striving hard to make the best of the new normal and working towards our mission to ensure that learning will never be interrupted, no matter what".

PUNCTUALITY IS ABOUT RESPECTING OUR COMMITMENTS

DR. RAM SINGH

"I'm on my way, just about to reach !" A familiar phrase that comes effortlessly when we are running late.

We must understand that "Punctuality is not about being on time, Punctuality is about respecting our own commitments." It's an important virtue that needs to be inculcated and engraved right since childhood by the parents and teachers at homes and schools respectively. Parents play a pivotal role and are the first teachers in a child's life and their prominence definitely cannot be ignored.

The very first thing to start is by showing your child how important it is to attend school every day. You may consider "it's only one day off" but they all add up, and once your child starts missing classes he/she will certainly lag. They must be taught that consistently being on time is the product of proper planning, personal discipline and respect for other people's time. Making a habit of being late demonstrates none of these things and is often a sign of patchy priorities and selfishness.

Habitual lateness says " My time is more valuable than yours." The parents and teachers need to understand their responsibilities and help their children learn to be reliable and a person of integrity by adopting the discipline necessary to be on time.

GUEST COLUMN

Punctuality is equally as important as attendance for your child's education. A child who is late will gradually miss a lot as each day is full of learning. As a parent, there are myriad ways to make your child understand the significance of being on time and soon this will become his/her habit to be punctual. You can accentuate a scheduled homework, specific timeline for playing, and watching television which in turn would help them to understand the importance of planning and managing their time. Children should be constantly reminded to follow the routine and finish their tasks on time.

Most importantly during the primary years, it is crucial for parents to model their behaviors as well, as children replicate the activities of the adults. So, parents need to inculcate good habits in children by setting an example themselves. This involves practices like going to bed and waking up early, exercising self-control with the use of technology, keeping things in place, being organized, and developing a daily routine that would help to be in control of everything. Punctuality and good time management skills are vital for children to be successful in life. With being punctual, children get a sense of stability, security, and self-confidence.

At DPS Ranchi we believe, Punctuality is essential for students to achieve their full educational potential. It is also vital for students to form good habits for later life. We motivate and felicitate children with 100% attendance. That day is as much celebrated an occasion as any other felicitation ceremony. Today being isolated during lockdown has brought challenges to almost every household, and the normal daily routine has been completely disrupted which can lead to anxiety and mental health conditions.So in these trying times, it's important for the students to be punctual in their routine, eat healthy, sleep well, and stay fit. Adhering to the routine would create an opportunity to learn a new skill or brush up your skillset and enhance your knowledge. The trouble is that we think we have time but the fact is 'Time and tide, waits for none' and the time wasted cannot be recycled.

(The writer is the Principal of DPS Ranchi. Dr. Ram Singh is a man known for bringing breakthrough revolutions in the field of education and for thinking way ahead of time. It is his incessant thrive for the success of his students only that has earned meritorious recognition of the school at state as well as country level. On one hand , where he is an educationist of great repute , he is also an ardent social worker at heart. A living example of "service before self ". He is associated with several charitable foundations working for children and gives full support to them so that it accelerates their charitable endeavour for the upliftment and betterment of "Young India".)

MORNING INDIA Wed, 16 September 2020
epaper.sanmarglive.com/c/55002535

जनसंख्या और शिक्षा के बीच निर्णायक रिश्ता

डॉ. राम सिंह

सीधे तौर पर देखें तो जनसंख्या और शिक्षा के बीच कोई प्रत्यक्ष रिश्ता नजर नहीं आता है। लेकिन, गहराई में जाने पर पता चलता है कि दोनों के बीच निर्णायक रिश्ता है। आज शिक्षा जनसंख्या नियंत्रण का कारगर हथियार साबित हो रही है। पढ़े-लिखे लोगों की तुलना में अशिक्षितों के बीच जनसंख्या वृद्धि दर अधिक है। इसपर शोध करने वालों ने इसे साबित भी कर दिया है। आप भी अपने परिवेश में इस तथ्य की परख कर सकते हैं। शोध के हवाले से कहा गया है कि हाई स्कूल पास महिलाओं की तुलना में इंटर पास महिलाएं परिवार नियोजन के मामले में अधिक सतर्क रहती हैं। यदि शिक्षा के बढ़ते क्रम से जनसंख्या वृद्धि का आकलन किया जाए तो और अच्छे परिणाम नजर आएंगे। इसमें कोई दो राय नहीं है कि शिक्षा के प्रसार के चलते संपन्न और शिक्षित लोगों के अलावा आम लोगों में भी कम बच्चे पैदा करने के प्रति जागरूकता बढ़ी है। अब लोग अकुशल श्रमिक पैदा करने के बदले कौशलयुक्त संतान के प्रति आग्रही हो रहे हैं। बहुसंख्यक समुदाय में यह मिथ भी टूट रहा है कि पुत्र से मुखाग्नि मिलने के बाद ही मोक्ष की प्राप्ति होती है।

आप अपने आसपास उन जोड़ों की शिनाख्त कर सकते हैं जिन्होंने एक ही संतान पर संतोष कर रखा है। यह संतान पुत्री भी हो सकती है और पुत्र भी। उस जमाने की तुलना में जब पुत्र की चाहत में लोग कई संतानों के पिता बन जाते थे, आज इस चाहत में कमी आई है। अतीत पर गौर करें तो पाएंगे कि जनसंख्या वृद्धि बेवजह नहीं थी। समाज के पास कई तर्क थे। कई मुश्किलें थीं। शिशु मृत्यु दर अधिक रहने के कारण लोग अधिक से अधिक संतान इसलिए चाहते थे कि उनमें से कुछ असमय चले जाएंगे और बचे बच्चे बुढ़ापे की लाठी बनेंगे, लेकिन अब शायद ही कोई बच्चा बुढ़ापे में अपने अभिभावकों का सहारा बन पाता है। संपन्न लोगों में तो लाठी न बन पाने की प्रवृत्ति विकृति के स्तर पर है। आपमें से कई लोग उन संपन्न पुत्रों को जानते होंगे, जिन्होंने बुढ़ापे में अपने मां या बाप या फिर दोनों को घर से बाहर का रास्ता दिखा दिया। इस प्रवृत्ति का भी जनसंख्या नियंत्रण पर प्रभाव पड़ा है। इसी तरह शिशु मृत्यु दर में कमी और स्कूल में पढ़ाई की गारंटी का असर भी जनसंख्या वृद्धि की रफ्तार को कम करने में मददगार है। लोगों को ठेठ ढंग से भी समझाया जा सकता है कि साधन लगातार बढ़े। फिर भी किल्लत कायम है तो इसका साफ मतलब है कि साधन की तुलना में उपभेग करने वालों की तादाद बढ़ रही है। इसे न्यूनतम इकाई परिवार से लेकर, राज्य देश और दुनिया के स्तर पर देखा जा सकता है।

इसलिए अगर आप जनसंख्या नियंत्रण के प्रति गंभीर हैं तो किसी और का बाद में, पहले अपना भला करते हैं। यह जरूरी है कि जनसंख्या नियंत्रण के कार्यक्रमों के प्रति सरकारी मशीनरी की सुस्ती तोड़ने को इसके प्रभावी मानिटरिंग की व्यवस्था की जाए।

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की आबादी 121 करोड़ थी तथा अनुमान लगाया जा रहा है कि वर्तमान में यह 130 करोड़ को भी पार कर चुकी है, साथ ही वर्ष 2030 तक भारत की आबादी चीन से भी ज्यादा होने का अनुमान है। ऐसे में भारत के समक्ष तेजी से बढ़ती जनसंख्या एक बड़ी चुनौती है क्योंकि जनसंख्या के अनुपात में संसाधनों की वृद्धि सीमित है। इस स्थिति में जनसांख्यिकीय लाभांश जनसांख्यिकीय अभिशाप में बदलता जा रहा है। इसी स्थिति को संबोधित करते हुए भारत के प्रधानमंत्री ने स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर इस समस्या को दोहराया है। हालांकि जनसंख्या वृद्धि ने कई चुनौतियों को जन्म दिया है किंतु इसके नियंत्रण के लिये कानूनी तरीका एक उपयुक्त कदम नहीं माना जा सकता। भारत की स्थिति चीन से पृथक है तथा चीन के विपरीत भारत एक लोकतांत्रिक देश है, जहां हर किसी को अपने व्यक्तिगत जीवन के विषय में निर्णय लेने का अधिकार है।

भारत में कानून का सहारा लेने के बजाय जागरूकता अभियान, शिक्षा के स्तर को बढ़ाकर तथा गरीबी को समाप्त करने जैसे उपाय करके जनसंख्या नियंत्रण के लिये प्रयास करने चाहिये। परिवार नियोजन से जुड़े परिवारों को आर्थिक प्रोत्साहन दिया जाना चाहिये तथा ऐसे परिवार जिन्होंने परिवार नियोजन को नहीं अपनाया है उन्हें विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से परिवार नियोजन हेतु प्रेरित करना चाहिये।

(लेखक डीपीएस रांची के प्राचार्य हैं।)

Donate Blood Save Life

Jharkhand Sector CRPF is setting an example in the field of blood donation

"Give Blood. Give Now. Give Often" -Sanjay Anand Lathkar, IPS, IG, CRPF

Sanjay Anand Lathkar, IG, CRPF, led about 300 officers and jawans to donate blood on the occasion of World Blood Donor Day 2017 on June 14 at Sector II of Ranchi's CRPF headquarters.

"We in CRPF are always ready to give up our lives to save our country. At the same time, we in CRPF, officers and jawans alike, are never found wanting on social, community and humanitarian issues. This year, we have given ourselves a target of donating 1,000 plus units of blood. All the collected blood will be given to blood banks to replenish their back up," said Lathkar while inaugurating a blood donation drive at the CRPF headquarters.

Organised by CRPF, the function was powered by The Telegraph, Life Savers Group, Gandhinagar Hospital of Central Coalfields Ltd, Devkamal Hospital, Guru Nanak Hospital, MTC Hospital and Lohardaga Blood Bank.

"Why should we get active about blood donation only for a single day?" Lathkar questioned. The IG, CRPF pointed out that blood banks face a perpetual shortage of blood. He stressed that the CRPF in Jharkhand would need to make blood donation a regular feature in the interests of the society at large.

"At Garhwa, in Jharkhand, a CRPF jawan, L Singh, received a call at around midnight from a local hospital, asking him if he could donate blood needed urgently by a pregnant woman. True to the ideals of CRPF, our brave jawan, abandoned his night's sleep to come to the rescue of an unknown woman. He went to the hospital and donated blood. Though we later felicitated the jawan with a citation and an award, this is the exemplary spirit that is displayed at all times by CRPF officers and jawans," the IG, CRPF recalled.

"Unfortunately, there are a lot of taboos associated with blood donation. These need to be broken. We at CRPF intend to carry out regular awareness programmes to educate our jawans and their families on the health benefits of blood donation," Lathkar added.

"There must be a number of jawans with high cholesterol problems. Blood donation helps in rapid reduction of cholesterol levels in our blood. Small but important pieces of information like this need to be conveyed to our force to encourage our jawans to donate blood in a regular frequency," IG, CRPF said.

"Let us create a data bank containing complete details of the blood group of every officer and jawan in all battalions stationed in Jharkhand. Once this is created, we can share it with voluntary blood donor groups and a copy would be kept at our control room. Anyone in need of blood can contact our control room, which in turn would get in touch with the CRPF donor and arrange for a blood donation" he said.

Speaking on the occasion, **Dr. Ram Singh, Principal, Delhi Public School, Ranchi,** thanked the CRPF, The Telegraph, Voluntary Blood Donor's Association and all the partner organisations for their efforts in organising blood donation camps and in encouraging more and more people to donate blood.

"Every year, on 14 June, countries around the world celebrate World Blood Donor Day to raise awareness about the need for safe blood and thank blood donors for their life-saving gifts. Blood is God's gift to man and is an important resource, both for planned treatments and urgent interventions. Hence it becomes our sacred duty to donate blood at regular intervals to save human lives," Dr. Singh explained.

"There is a need to organise such awareness campaigns in our schools and educational institutions as well to make our young minds aware of the need for blood donations. Children in schools would not be eligible to donate blood though they need to be made aware of the health benefits of blood donation. I shall extend all cooperation in this regard," Dr Singh assured.

The global focus of this year's World Blood Donor Day is blood donation in emergencies. And therefore the message "Give Blood. Give Now. Give Often" is apt and timely. In every country, including India, there's a vital need to maintain a regular supply of all blood groups and types, so it's available to patients when it's needed. To put simply, without adequate blood supplies, people would die. Giving blood is a simple and safe process. In fact, health benefits of donating blood include good health, reduced risk of cancer and hemochromatosis. It helps in reducing the risk of damage to liver and pancreas. Donating blood may help in improving cardiovascular health and reducing obesity.

0651-2545404 : रिम्स हेल्पलाइन

स्वदेश TODAY | विशेष | रांची, मंगलवार, 10.12.2019 | 12

शिक्षा का उद्देश्य डिग्री के साथ-साथ चरित्र निर्माण करना है : डॉ राम सिंह

झारखंड के जानेमाने शिक्षाविद डॉ राम सिंह हर मुद्दे पर अपनी बेबाक राय के लिए जाने जाते हैं। राज्य के सबसे प्रतिष्ठित स्कूल डीपीएस के प्रिंसिपल के रुप में उन्होंने बेहतरीन जिम्मेवारी निभायी है। देश और विदेश में स्कूल की कीर्ति को नई ऊंचाईयों पर पहुंचाया है। डॉ सिंह की पहचान सादगी, ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठ इंसान की है। उनका मानना है कि देश और समाज के विकास के लिए शिक्षा के साथ ही संस्कारों का भी होना जरुरी है। डिग्री जरुरी है पर इसके साथ ही राष्ट्र प्रेम भी होना चाहिए, देश के निर्माण में युवाओ की भूमिका बड़ी है। देश की उन्नति होगी तो हमारा समाज समृद्ध होगा। नए भारत के निर्माण के लिए अपने विरासत को भी जोड़ने की आवश्यकता है। डॉ राम सिंह ने दैनिक स्वदेश टुडे से कई मुद्दों पर बात की प्रस्तुत है बातचीत के संपादित अंश...

किसी भी विकसित राज्य के निर्माण में मजबूत शिक्षा व्यवस्था का बड़ा रोल है- झारखंड के परिपेक्ष्य में इसे आप कैसे देखते हैं।

देखिए, झारखंड में हमारे जो दो-तीन जिले हैं रांची, जमशेदपुर, बोकारो, धनबाद और हजारीबाग की बात करें तो यहां की शिक्षा में और अन्य जिलों की शिक्षा में बहुत अंतर है। स्कूली शिक्षा में बहुत कुछ करने की जरुरत है। राज्य सरकार ने जो कुछ किया खासतौर पर पिछली सरकारों ने और आगे की जो सरकार आएगी उसके लिए एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। शिक्षा को कैसे व्यवस्थित करें, जो एक डर था, जो स्कूल मर्ज हुए थे और झारखंड बोर्ड को सीबीएसई बोर्ड करने की बात थी। इसका एसेसमेंट करने का था पर अभी भी एक्सपेरिमेंट का ही प्रोसेस चल रहा है। कुछ चीजें हम देखते हैं जो बोर्ड है जैक, कुछ-कुछ इंट्रोड्यूस करता है कुछ चीजों में पीछे हटते हैं। तो इससे बाहर निकलकर एक दूरगामी प्लान और विजन पर काम करते हुए बोर्ड और शिक्षा व्यवस्था को दुरुस्त करने की जरूरत है। इसके लिए देश में अन्य जो विकसित प्रदेश जो शिक्षा के क्षेत्र में अच्छा काम कर रहे हैं, उनकी व्यवस्था को भी हम लागू कर सकते हैं। क्योंकि देखिए जब से मिड डे मील स्कीम की जिम्मेदारी बोर्ड या डीइओ, डीएसी जिला प्रशासन को मिला है। तो एक तरह से दोहरी जिम्मेदारी हो गई है। हम किसी एक पर दोषारोपण नहीं कर सकते की कोई विभाग अच्छा काम नहीं कर रहा है। हमारे शिक्षा विभाग के अधिकारी बहुत ही अच्छा काम कर रहे हैं। लेकिन अब एक दूरगामी और सस्टेनेबल योजना पर काम करने की जरुरत है। क्योंकि अभी बहुत सी ऐसी समस्याएं हैं जो शिक्षा के कारण ही हैं। अगर शिक्षा व्यवस्था ठीक नहीं किया गया तो बहुत सारी समस्याएं चाहे वह चाइल्ड ट्रैफिकिंग, चाइल्ड मैरिज, डायन बिसाही हो ये सभी शिक्षा के अभाव के कारण ही समाज में मौजूद हैं। इसमें मैं एक और चीज जोड़ना चाहूंगा कि चूंकि हमारे प्रदेश में मूलभूत सुविधाओं का आभाव है इसलिए इसको ध्यान में रखते हुए अधिक से अधिक टेक्नोलॉजी का प्रयोग करना जरुरी है इससे समाज को जोड़ा जा सकता है एक तरह की शिक्षा दी जा सकती है। सबको एक साथ जोड़ के यूनिफार्म ग्रोथ की जरुरत है। अगर ऐसा नहीं हुआ तो खाई बढ़ती जाएगी। यह असंतोष को बढ़ावा देगा और अलग तरह की समस्याएं सामने आएंगी।

> नए भारत के निर्माण के लिए अपने विरासत को भी जोड़ने की आवश्यकता है। केवल डिग्री से, मार्क्स से काम नहीं चलेगा। कंपीटिशन क्वालीफाई करने से नहीं चलेगा।

आप स्कूली शिक्षा में झारखंड कहां खड़ा पाते हैं।

देखिए, स्कूली शिक्षा में झारखंड में आईसीएसई बोर्ड के जो स्कूल हैं उन्होंने क्षेत्र में शिक्षा का स्तर और महौल दोनों को ऊपर उठाने में काफी योगदान दिया है। कुछ काम अभी हाल के वर्षों में भी हुए है पर अभी बहुत कुछ करने की जरुरत है। शिक्षकों नियुक्ति से लेकर स्कूलों में कई प्रकार के बुनियादी सुविधाएं अभी नहीं उपलब्ध हैं जिसे पूरा करने की आवश्यकता है। कुछ छोटी-छोटी चीजें भी है जिन पर ध्यान देने की जरुरत है जैसे बच्चों का स्कूल ड्रेस, किताब समय पर मिलना चाहिए। इसके साथ ही इसका स्टैंडर्ड तय होना चाहिए। जिससे बौद्धिक स्तर पर किसी तरह का गैप नहीं हो। जिससे बच्चों का और राज्य में शिक्षा का स्तर ऊंचा होगा। इसके साथ ही हायर एजुकेशन पर भी ध्यान देने की जरुरत है इसे रोजगारोन्मुखी करना होगा ताकि युवाओं को रोजगार मिल सके। कंपनियों की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए कोर्स की पढ़ाई हो या तकनीकी ज्ञान दिया जाए जिससे युवाओं को तुरंत नौकरी मिले।

स्थानीय युवाओं को अगर इस प्रकार से प्रशिक्षित किया जाय कि उन्हुं अपने राज्य में ही किसी कंपनी में रोजगार मिल जाए तो दोनों को ही फायदा होगा। कंपनी को सस्ते कर्मी चाहिए और युवाओं को भी अपने ही राज्य में रोजगार मिल जाएगा। इसलिए शिक्षा ऐसी हो जो कौशलयुक्त हो।

इसके साथ ही ये जो स्कूल एजुकेशन और कॉलेज का एजुकेशन है इसमें थोड़ा सा और कम्युनिकेशन और इंटरेक्शन की जरुरत है। जिससे बच्चे बाहर जाने के बजाय स्थानीय कॉलेजों में दाखिला लें और पढ़ें। अगर सरकार यहां ऐसी शिक्षण संस्थाओं की सुविधा दे तो बच्चों को बाहर भागने की जरुरत नहीं पड़ेगी। और अभिभावकों पर भी ज्यादा आर्थिक बोझ नहीं आएगा।

क्या स्कूली शिक्षा के साथ ही स्किल डेवलपमेंट का कोर्स शुरु किया जा सकता है जिससे युवाओं को रोजगार मिल सके।

इसके लिए तो प्रधानमंत्री जी बधाई के पात्र हैं कि उन्होंने बहुत बड़ी- बड़ी चीजों के साथ में छोटी-छोटी चीजों पर भी ध्यान दिया। जैसे कॉलेज में स्किल के लिए डिपार्टमेंट या स्किल का कोई सेंटर खोलने के काम हुए थे। लेकिन मॉनिटरिंग के अभाव में स्किल एजुकेशन एक सर्टिफिकेट कोर्स बनकर रह गया है। स्किल कोर्स के माध्यम से अगर रोजगार नहीं मिल पा रहा है तो कहीं न कहीं मॉनिटरिंग या उसके स्टैंडर्ड में कोई चूक हुई है। सरकार को इसमें विशेष पहल करने की आवश्यकता है ताकि युवाओं को उनके स्किल के अनुसार कंपनियां रोजगार मुहैया कराएं और उन्हें वाजिब सैलरी मिले।

आप शिक्षाविद हैं युवाओं को क्या संदेश देना चाहेंगे।

देखिए, शिक्षा, संस्कार, राष्ट्रप्रेम यह सब चीजें एक समानांतर हैं बच्चों की अच्छी आदतें हों, अच्छे संस्कार हों, अच्छा चरित्र हो, हमारी शिक्षा ऐसी होनी चाहिए, जिसमें ये सभी चीजें मौजूद हों। और बच्चों को डिग्री के साथ-साथ इन सभी चीजों को भी अपने में आत्मसात करना चाहिए। कहीं दूसरी जगह भागकर सुविधा के चक्कर में, सैलरी के चक्कर में, न होकर अपने देश, मातृभूमि को ही बदलने का प्रयास करना चाहिए। ऐसा नहीं की हमको अच्छी सैलरी मिली तो हम विदेश चले गए और वहां से आकर उपदेश दें। हम बाहर जाते हैं तो वहां सफाई देखेंगे और यहां नही करेंगे। ये सब चीजें दिखाता है कि हम कहीं न कहीं अपने जड़ से अलग हो रहे हैं, अपने संस्कार से अलग हो रहे हैं अपनी सोसाइटी से हम कट रहे हैं। तो आओ घर की तरफ लौट चलें, यही संदेश है कि जो हमारी विरासत थी। अपने चाचा, चाची, दादा, दादी से हमको प्रेम हुआ करता था, हम सैक्रिफाइस करते थे। समाज में जो विषमताएं आई हैं उसपर गंभीरता से सोचने की जरुरत है। नए भारत के निर्माण के लिए अपने विरासत को भी जोड़ने की आवश्यकता है। केवल डिग्री से, मार्क्स से काम नही चलेगा। कंपीटिशन क्वालीफाई करने से नहीं चलेगा।

उपलब्धियां

- एसोचैम द्वारा स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में नवाचारों और उत्कृष्टता के लिए पुरस्कार से सम्मानित
- साइंस ओलंपियाड फाउंडेशन ने वर्ष 2014-15 में बेस्ट प्रिंसिपल अवार्ड से डॉ राम सिंह को सम्मानित किया।
- 2012 में प्रख्यात शिक्षाविद् अवार्ड से सम्मानित किये गए।
- झारखंड की राज्यपाल द्रौपदी मुर्मू ने प्रतिभा सम्मान से नवाजा।
- एके वालिया स्वास्थ्य मंत्री दिल्ली द्वारा बेस्ट एनसीओ इंचार्ज अवार्ड
- अवंतिका द्वारा प्रियदर्शिनी पुरस्कार से सम्मानित
- 2011 में लायंस क्लब रामपुर ने बेस्ट प्रिंसिपल अवार्ड
- वर्ष 2012-13 में सीबीएसई आरओ इलाहाबाद द्वारा छात्रों के प्रदर्शन के लिए गोल्ड डॉलर अवार्ड से

युवाओं को शिक्षित करना मेरी पहली प्राथमिकता : डॉ. राम सिंह

अच्छी संगति का है जीवन में बड़ा महत्व

अच्छी संगति सभी के लिए बहुत जरूरी है। अच्छे लोगों का साथ, मेल-मिलाप मन में सकारात्मक विचार उत्पन्न करता है। यह कहना है डीपीएस रांची के प्राचार्य डा. राम सिंह का। उन्होंने कहा कि वास्तव में

डा. राम सिंह
प्राचार्य, डीपीएस, रांची

दैनिक जागरण **संस्कारशाला**

अवनति की ओर धकेल सकती है। छात्र जीवन में सत्संगति विशेष महत्व रखती है। बालमन दूसरों से ही सबकुछ सीखता है। बुराई में सहज आकर्षण होता है और इसके प्रभाव में कम उम्र के छात्र जल्दी आ जाते हैं। बुरी संगति का शिकार होकर छात्र

आम तौर पर पाया गया है कि श्रेष्ठ खिलाड़ी अच्छे खिलाड़ी का साथ चाहता है, कलाकार को कलाप्रेमी पसंद आते हैं। क्योंकि समान रुचि के कारण यह संगति उनके गुणों को निखारने वाली होती है। वर्तमान तकनीकी युग में वर्चुअल संगति भी सोशल मीडिया के रूप में बहुत लोकप्रिय हुई है। यहां भी विचारवान माता-पिता के निर्देशन में छात्र अपनी सद्संगति का चुनाव करता है। माता-पिता, विद्यालय और परिवेश सबकी नैतिक जिम्मेदारी होनी चाहिए कि

चंपारण में हुई अंग्रेजी हुकूमत की पहली पराजय : राम सिंह

रांची। चंपारण के गांधी नाम से प्रसिद्ध पंडित राजकुमार शुक्ल जी के 144 वें जन्मदिन व महात्मा गांधी के 150वीं जयंती वर्ष के अवसर पर शुक्रवार को सेंट जेवियर्स स्कूल के सभागार में पंडित राजकुमार शुक्ल फाउंडेशन द्वारा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डीपीएस के प्राचार्य राम सिंह ने कहा कि बहुत कम लोग जानते हैं कि अंग्रेजी हुकूमत की पहली पराजय चंपारण में हुई। 135 वर्ष के कानून को उसे संशोधन करना पड़ा फिर बाद में बंद करना पड़ा। यही नहीं महात्मा गांधी का भी महात्मा नाम यहीं

प्रतिनिधित्व किये और कम पढ़े लिखे होने के बावजूद किसानों की समस्याओं और खासतौर पर चंपारण की समस्या की ओर सबका ध्यान आकर्षित किया।

कोलकता जाकर उन्हें पटना और मुजफ्फरपुर के रास्ते मोतिहारी आने और वहां के किसानों की दुर्दशा जानने का मौका मिला।

मौके पर झारखंड विधानसभा के

डलवाने में पंडित राजकुमार शुक्ल की भूमिका अहम थी। नील आंदोलन के माध्यम से किसान विरोधी आदेशों को परिवर्तित कराया गया था इस जनांदोलन को सफल बनाने के लिए पंडित राजकुमार शुक्ल ने अपनी सारी संपत्ति तक को बेच डाली थी। सेंट थॉमस स्कूल के प्राचार्य शिबू अब्राहम मैथ्यू ने बताया कि इन दोनों स्वाधीनता सेनानियों से किस प्रकार हम प्रेरणा लेकर अपनी जीवन यात्रा का मार्गदर्शन कर सकते हैं।

सभा का समापन आईसीएल के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष शशिकान्त शर्मा

TT CONNECT INITIATIVE

"Meeting with Dr A P J Abdul Kalam was the most changing moment of my Life"- An Exclusive Interview with Dr Ram Singh, Principal, Delhi Public School, Ranchi

Dr Ram Singh
(Principal)

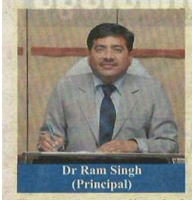

When an Australian teenager girl , questioned a former Prime Minister of India during his visit to Canberra, Australia just after he became the Prime minister that who taught him politics at such a young age, to which the young Prime minister quipped with the witty answer," No one teaches 'a fish to swim'". The same can be correctly said about Dr Ram Singh, Principal, DPS, Ranchi in whose genes and blood there resides quality and values of a teacher and an educationist, his father – Kalpanath Singh being a retired headmaster, elder sister Sushma Singh - a teacher and his younger brother Dr Jai Singh - a professor at Banaras Hindu University .

A diehard fan of Super star Amitabh Bacchan and vivacious Kajol, Dr Ram Singh loves badminton as his favorite game while football comes next in his list. His ideal player still remains Kapil Dev of Cricket fame who won the Cricket world cup for India for the first time, at Lords in a country which ruled over us.

A true nationalist from core of his heart Dr Ram Singh can be described as an academician cum able administrator besides a simple and humble human being who has proved to be a great mentor for his staff and students while the school under his visionary stewardship has carved a niche and reached the pinnacle of success in Jharkhand. Dr. Ram Singh has steered the institution with dedication and is a role model to be emulated. A young and dynamic leader he puts in selfless toil to make the school the best in every sphere possible, who is symbolized as beacon of light for everyone around him as he has undoubtedly empowered the Dipsites of Ranchi and enabled the school to carve a place of pride for itself on the national and international map in a very short span of time. Hailing from land of pious, nationally acclaimed Saint Guru Gorakhnath on whose name the city Gorakhpur is named and which lies in eastern UP, Dr. Ram Singh started his career as a teacher in Physics from Navodya Vidyalaya, Jaunpur after doing his MSc and Ph. D in Physics. Dr Singh taught physics to students of DPS Bokaro from 1995 till 2007 for which this academician was awarded by union minister B.S Rawat as well as Delhi minister A. K.Walia in early decade of 21st century. His career in teaching says his tale of success with 12 years teaching experience in Delhi Public School Bokaro Steel City, Principal DMA- Rampur (U.P.), Principal in DPS Balco, Korba (C.G.) before coming to present post as Principal DPS Ranchi.

His other experiences include center superintendent CBSE/ AISSE/ AISSCE/ AIEEE/IIT-JEE since 2004 besides being Head Examiner of Physics for AISSCE 2004, State Coordinator for Unified Council in 2004 (Jharkhand State), Observer for TET-CTET, CBSE-AIEEE/AIPMT Examinations, Member of Committee for Affiliation/Up gradation of CBSE Schools, Mentor/Trainer for CCE implementation in School, Observer for CBSE Practical Examination in different cities.

Among the awards and recognition for his meritorious service stands Member of Indian Association of Physics Teachers (IAPT), President of Sahodaya Schools Complex Rampur, President of Spic Macay, Rampur (U.P.) chapter from 2009 – 12, President of Aurbindo centre of Integral Education Rampur (U. P.), Best Co-coordinator Award by Central State Minister of Home Shri Bachhi Singh Rawat (Central Government) from Science Olympiad Foundation New Delhi in 2004, Best NCO In-charge Award by Shri. A.K.Walia State Health Minister Delhi,.

State Coordinator of Jharkhand state f Unified Council Hyderabad, awarded Go Dollar for Performance of Students Unified Council, in 2004, awarded t prestigious prize for innovations & excellen in school education from ASSOCHAM. D Ram Singh is also the present President Sahodaya Schools Complex Ranchi Wh asked what according to him can a princip be described as, to which Dr Singh quoted international academician Dr Whiteker great teacher can be defined by two simp words- Best friend. Who better to trust than best friend? Who better to love and be loved return than a best friend? Who better to ga knowledge from, than a best friend? Finall who better to remember throughout the da of your life, than a best friend? Let's all teachers, shall we" stated the humble teache "When the principal sneezes, the who school catches a cold. This is neither good n bad; it is just the truth. Our impact significant; our focus becomes the schoo focus and so role of principal along wi teachers not only brings academic atmosphe in school but affects the lives of thousands youngsters for shaping them "explained Ram Singh. He further added "If principa spend time researching best practices and ta quality time to have conversations wi teachers about teaching and learning, th will be able to have a positive impact on t buildings they serve. And don't get me wron being a principal means serving those wh teach, learn and parent in the community."

Q. Challenges of your life?

A: I believe that life everyday comes with a host of new challenges to be faced. I try to accomplish each day's task with perfection and 100% honesty and for that I make sure that I do not shirk from endeavours. Life tends to disappoint if the efforts do not give the expected result and this is one real challenge- how to keep going with positive energy and perseverance even in odd circumstances. I read somewhere that if challenges could always be overcome they would cease to be a challenge. Our efforts should be aimed at overcoming these hurdles, whatever consequence it bears. Therefore, it is very important for me to make the right decisions in life, to do good work with integrity and to live up to the expectations of people especially each and every student who looks up to me. All these things become all the more important in the wake of myself being the head of an institution which shapes thousands of children to prepare for life.

Q. Your expectations from students and human beings?

A: I am a teacher to the core when it comes to my expectations from human beings, more importantly children. While taking certain policy decisions in school, my ultimate motive is to equip the students with all the skills and values required to lead a quality life, to enable them in such a way that they can contribute to the real development of the society and above all to sensitize them towards social and environmental issues. And herein lay my aspirations. Set short term goals to realize the long term vision. Children must take education very seriously; learn as much as they can through as many ways as possible for there is magic in knowledge. Aim to become big not just in terms of qualification and stature, but also as a person. Patriotism is the greatest service to the nation which can be rendered simply by respecting your work and doing it with honesty, no matter how small it is. It's your attitude that makes it big. I expect people to aspire, perspire, achieve and excel but to top it all, they should be wonderful human beings.

Q. Best qualities you have inherite from your parents?

A: I am blessed to have been born in such loving family. Most of my famil members are in the teaching professio that is another connecting thread amon us. My parents believe in simple living an high thinking and I too have grown u believing in this philosophy. Whatever am today, it's due to teachings of m parents which are instrumental in shapin me up. The values they (parents) hav imparted in me have made me a sensitiv person at heart, but living with stron ideals. Honesty, punctuality an truthfulness are my assets which I hav inherited from them. Education is ver important for me. I am very close to m mother and still long for some time t spend with her.

Q. Any momentous occasion whic changed your life?

A: I have been brought up on the ideals o simplicity, honesty and the persisten efforts to do good work and I have trie every day to give a meaning to my life. My tryst with respected Dr. A P J Abdul Kalam was the most momentous and remarkabl moment for me and I can say a turning point in my life. His (Dr Kalam) zeal t contribute to society particularly throug education is highly inspiring. Thi stimulated my thoughts to do something for society and helped converting them into action. After meeting him, I felt a strong sense of responsibility of imparting knowledge to the underprivileged sectio of society. I was encouraged to delve int organizing educational programmes fo the weaker sections, starting evenin classes, arranging computer classes fo them. Whatever be our achievements, th satisfaction and pleasure that is derive from working for others is above all.

युवाओं को शिक्षित करना कर्तव्य है और समाज को संवारना जिम्मेदारी

◆ युवाओं में पीढ़ी दर पीढ़ी ज्ञान और तजुर्बे को बांटना जरूरी ◆ शालीनता, कुशल व्यवहार और कर्तव्यनिष्ठा ही इंसान की सबसे बड़ी पूंजी

डॉ राम सिंह, यह सिर्फ नाम नहीं, बल्कि शिक्षा की अलख जगानेवाले, ज्ञान बांटनेवाले, अनुशासन का पाठ पढ़ानेवाले और सबसे अलग सिर्फ छात्र ही नहीं, बल्कि एक अच्छा इंसान गढ़नेवाले के रूप में ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। इनकी एक पहचान सादगी, ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा भी है। बेलाग बात, स्पष्ट सोच और प्रखर वक्ता के रूप में भी इनकी प्रसिद्धि है। राष्ट्रप्रेम तो कोई इनसे सीखे। पिछले 22 वर्षों से ये छात्रों के बीच ज्ञान की गंगा बहा रहे हैं। अपने पिता कल्पनाथ सिंह और देश के पूर्व राष्ट्रपति डॉ अब्दुल कलाम को अपना आदर्श माननेवाले डॉ राम सिंह ने समाज में ज्ञान बांटने के लिए भाभा एटोमिक रिसर्च सेंटर की नौकरी छोड़ शिक्षक बनने का फैसला किया। इनका योगदान सिर्फ शिक्षा के क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि सामाजिक क्षेत्रों में भी बराबर का रहा है। इनका कहना है कि युवाओं को शिक्षित करना इनका कर्तव्य है और समाज को संवारना इनकी जिम्मेदारी। शिक्षा के क्षेत्र में छात्र-छात्राओं के आदर्श बन चुके डीपीएस स्कूल के प्रधानाचार्य डॉ राम सिंह ने आजाद सिपाही के सहयोगी **राहुल सिंह** से खुल कर बात की। यह बातचीत लगभग एक घंटे तक हुई। सहज, सरल और स्पष्ट शब्दों में उन्होंने अपने विचार बांटे। **प्रस्तुत है उस बातचीत के अंश:**

बदल गया है डीपीएस

इन पर भी नजर डालें

ऐसे हो परीक्षा के लिए तैयार

भारत के भावी नागरिकों के लिए गहरी और स्थायी करूणा के संगम डा० राम सिंह एक ऐसी संस्था का नेतृत्व कर रहे हैं जो इसे वैश्विक स्तर पर अग्रणी स्थापित कर रहा है।

Mobile No.- 9431700041
Email ID :- rs1224@rediffmail.com
Website:- www.drramsingh.com
Facebook:- rs1224@rediffmail.com